प्रातः क्लास 5/7/68 ओमशान्ति पिताश्री "शिवबाबा को याद किस प्रकार करें?ओमशान्ति। बाप बैठ यहां समझाते हैं जबकि इस शरीर पर सवार है। बच्चे जानते हैं कि बाप इस रथ द्वारा ही अपना परिचय देते हैं और सृष्टि चक्र का ज्ञान भी देते हैं। तुम यहां बैठे हो, देखते हो रथ पर बाप विराजमान है। इस बाप ने ही सारी सृष्टि–चक्र का राज़ समझाया है। बाप सम्मुख बैठे हैं। हम बाप को याद करते हैं, तो बाप भी बच्चों को याद करते हैं। जो मददगार बनते हैं। अच्छा अभी तो बाप सम्मुख हैं, अच्छा समझो जैसे ममा(मम्मा) बैठती थी कहती थी बाप को याद करो या यहां भाई बैठते हैं। भाई(आत्मा) बहन को अर्थात फिमेल के रूप में बैठा है। तो तुम किस प्रकार याद करते हो। किसको और कैसे याद करते हो। बुद्धि कहां जाती है। बुद्धि ऊपर चली जाती है या जिस रथ में शिवबाबा आते हैं उनको याद करते थे या समझते थे बाबा परमधाम में रहते हैं अभी इस रथ पर आने वाला है। उस समय क्या–2 याद करते हो। अनुभव बताओ। अथवा अपने घर में जाते हो तो कैसे याद करते हो। बाप को याद करते हो तो बाबा को ऊपर में याद करते हो या इस रथ को याद करते हो अर्थात बाप–दादा को याद करते हो ? बताओ। यह तो है बेहद का बाप। यह तो यहां बैठे भी सारे विश्व को याद करते हैं। उस में भी इनपार्टीकुलर और इन जेनरल है। पार्टीकुलर अर्थात जो सम्मुख है उनको याद करते हैं। उसमें भी जो जास्ती सर्विस करते हैं उस तरफ़ जास्ती नजर जाती है। उनको अच्छी रीत देखते हैं प्यार करते हैं। कोई–2 को तो ऐसे ही देख लेते हैं। यहां बैठे भी बुद्धि बेहद में चली जाती है। उसमें भी जो अच्छे–2 सर्विसएबुल बच्चे हैं वह भी शिवबाबा को रथ सहित ज़रूर याद करेंगे। रथ बिगड़(र) तो याद कर न सकें। बाप भी याद करेंगे रथ सहित। फलाने की आत्मा बहुत अच्छी सर्विस करती है। वह भी बाप को याद कर बाप के लिए सर्विस करते हैं। इसलिए बाप भी कहते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। चन्द्रमा के नजदीक भी सितारे होते हैं, दूर–दूर भी होते हैं। इसमें भल कोई कितना भी दूर हो फिर भी याद ज़रूर आवेगा यह बच्चा विलायत में बहुत अच्छा सर्विस कर रहे हैं। फलाने की आत्मा गांव में अच्छी सर्विस कर रही है। जो जो जैसी सर्विस करते हैं मनसा, वाचा, कर्मणा। कर्मणा में तो बहुत प्रकार की सर्विस आ जाती है। स्थूल तन की, धन की। तो यह सभी बातें बाप ध्यान में रखते हैं। यह बच्चा धन की बहुत मदद करते हैं। भल खुद इतना पुरुषार्थ न करते हैं, अवस्था इतनी अच्छी नहीं है; परन्तु उनके धन से बहुतों का कल्याण हो रहा है। भल ज्ञान न है फिर भी सर्विस बहुत अच्छी करते हैं कोई ऐसे भी आते हैं कहते हैं हमको फुर्सत नहीं है बाकी धन की मदद दे सकते हैं। इस धन से फिर बाबा यूनिवर्सिटी ही खोलेगा और क्या करेंगे। क्योंकि बाप नालेजफुल है ना। पवित्रता के लिए भी नालेज देते हैं। मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाप अभी तो यहां रहवासी है ना। वह हम सभी आत्माओं का बाप है। सुप्रीम है। उनको ही याद करना है। याद की ही मेहनत है। भल धंधे आद में रहो सिर्फ़ इतना तो याद करो। बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। बाप को हम यह मदद करते हैं, सेन्टर अथवा कालेज खोलते हैं तो इसमें बहुतों का कल्याण होगा। समझाया जाता है इसका भी तुमको बहुत फल मिलेगा। बहुतों का कल्याण होता है। इसको कहा जाता है तन–मन–धन से मनसा–वाचा–कर्मणा सर्विस करना। तो बाप बच्चों से पूछते हैं कैसे बाप को याद करते हो। बाप तो बेहद का मालिक है। जहां–2 भी जो बच्चे हैं सभी को याद करते रहते हैं। तुम बच्चों को तो याद करना है एक बाप को। तो जब याद करते हो तो क्या जहां रथ है वहां बाबा को समझ ऐसे बाबा को याद करते हो? समझो बाबा बम्बई में है तो क्या तुम्हारा बुद्धि योग बम्बई में चला जाता है। बम्बई में बाबा रथ पर विराजमान है। उनको याद करते हो। जो उनका स्थाई स्थान है उस बेहद के बाप के हम बने हैं जो बाप अभी नीचे आया हुआ है। जरूर आवाज करेंगे मन्मनाभव। तब तो पता पड़े ना कि बाबा हमको यह ज्ञान दे रहे हैं। जहां रथ घूमता–फिरता है वहां याद करते रहते हो या मधुबन में ही याद करते हो। बाबा मधुबन में मुरली चलाते हैं। कैसे तुम याद करते हो। क्या करते हो। रथ तो जरूर याद आवेगा। परन्तु रथ याद आते ही बाप कहते हैं मुझे

याद करो। बाप भी याद करते हैं ना फलाने की आत्मा बहुत अच्छी सर्विस करती है। भल कहां भी है वह उनको याद करना पड़ता है। जैसे कहेंगे देहरादुन में प्रेम बच्ची है बहुत अच्छी सर्विस कर रही है। याद तो जरूर शरीर से ही करते होंगे ना। बाप बहुत क्लीयर कर समझाते हैं। कहां मुंझते तो नहीं हो कि पता नहीं किसको, कैसे याद करना है। ऊपर में बाबा को याद करना है या इस रथ में याद करना है। रथ पर बाप क्यों आया है। अभी तो नीचे है ना। दुनिया तो इन बातों को बिल्कुल ही नहीं जानती। वह तो परमात्मा को ही सर्वव्यापी कह देते हैं। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, परशुराम अवतार ऐसे–2 नाम रख वह चित्र बना देते हैं। बाप समझाते हैं वह सभी हैं भक्ति–मार्ग की रांग बातें। बाप रांग और राइट दोनों बात समझाते हैं। राइट क्या है वह भी समझाते हैं। बाप को कहां याद करना है। बाप तो यहां रथ पर है। नीचे ही सभी की सेवा करते रहते हैं। बच्चों द्वारा। बच्चे बतलाते भी हैं आज बाबा हमको भक्तों पास ले चलो। वह देवताओं की कैसे पूजा करते हैं। वह दिखाया। पत्थर की मूर्ति बना उनको श्रृंगार कितनी पूजा करते हैं। जब देवियों को विदाई देते हैं तो रोने लग पड़ते हैं। जैसे कोई चैतन्य में बिछुड़ते हैं तो रोते हैं ना। वैसे ही बड़े–2 घर वाले मूर्ति को डुबोने पर रो पड़ते हैं। जैसे उनको डुबोते हैं। नहीं डूबते हैं तो लात मारकर भी डुबोते हैं। कितना उनको श्रृंगारते, खिलाते–पिलाते हैं यह सभी है भावना। खर्च तो बहुत होता है ना। फिर जाकर डूबो देते। मुसलमान लोग भी कितने बड़े–2 ताबुत बनाते हैं। आजकल पैसे कम हो गये हैं तो वह फिर सम्भाल से रख देते हैं। फिर 12 मास बाद मरम्मत आद कर निकालते हैं। यूं तो मंदिरों में मूर्तियाँ स्थाई रखी हुई हैं ; परन्तु यह खास दिन पर बैठ देवियां बनाते हैं। उनको खिलाये–पिलाये डूबो देते हैं। यह भी अज्ञान है ना। अभी बाप सम्मुख कहते हैं तुमको कितने पैसे आद दिये, कितने तुम धनवान थे। अभी कितने कंगाल बन पड़े हो। बाप सम्मुख समझाते हैं। ए(इ)नका रथ तो मुकर्रर है ही इन द्वारा ही समझाते हैं। कब–2 कोई और के रथ में भी जाकर किस–2 पायन्ट पर समझाते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो बाबा ने इस द्वारा ही अपना परिचय दिया है। मैं जब इस रथ में आता तो मुझे कोटों में कोई ही पहचानते हैं। मुझे याद तो सभी करते हैं। भारतवासी खास, दुनिया आम याद करती है। परन्तु उनको यह पता नहीं है बाबा अभी नीचे आया हुआ है। आते हैं वा नहीं आते हैं कुछ भी नहीं जानते। परमात्मा को ही ठिक्कर–भित्तर में ठोक देते। कहते भी हैं अल्ला गार्डेन स्थापन करते हैं; परन्तु गार्डेन किसको कहा जाता है वह जानते ही नहीं। तुम समझते हो आदि सनातन देवी–देवता धर्म को ही गार्डेन कहा जाता है। वहां जाने के लिए तुम बच्चों को पुरुषार्थ कराते रहते हैं। यहां र..... भी है तो बाप भी है। बाहर में तुम रहते हो। वहां तो रथ है नहीं। तो तुम बच्चों को रथ को भी जरूर याद करना पड़े। फलानी आत्मा फलाने रथ में बहुत अच्छी सर्विस कर रहा है। सभी आत्माएं अपने–2 रथ में विराजमान हैं ना। उनको अकाल तख्त कहते हैं। अकाल आत्मा का यह तख्त। अकालमूर्त बाबा जिसकी महिमा भी गाते हैं। तो तुम कहां भी होंगे रथ को भी जरूर याद करेंगे। बाप को भी याद करेंगे। यह भी तुम जानते हो इस रथ के फिर साकार में भी हम बच्चे हैं। रथ को तो जरूर याद करना पड़ता है जबकि बाप है। रथ बिगर भबकेगा तो नहीं। जैसे अशंध सोल भटकती है। बाप का तो मुकर्रर रथ है। आत्मा खुद कहती है मेरा यह एक ही रथ है। जिसमें मैं प्रवेश करता हूँ। तुम आत्माएं पहले–2 छोटे रथ में प्रवेश करती हो। मेरा यह एक ही रथ है जिसमें मैं प्रवेश करता हूँ। यहां तुम बच्चे आते हो सम्मुख सुनते हो। बाहर में तो समझते हो बाबा की मुरली आवेगी फिर हम सुनेंगे। बाप मुरली बजावेंगे तो जरूर यहां ना। सभी की नजर जरूर मधुबन में ही होगी। बाबा मधुबन में है। अभी वहां मुरली चलाता होगा। इस समय मुलाकात करते होंगे। बुद्धि योग ही मधुबन में होगा। मधुबन का नाम भी गाया हुआ है ना। मधुबन में बाबा मुरली बजाते हैं। दिल तो सभी की होती है। अभी तो तुम बच्चों को ज्ञान है। पहली–2 बात मन्मनाभव। अलफ पक्का याद करना है। फिर बे को याद करो। अलफ और बे और त थ में जाने की दरकार ही नहीं। बे से ही राजाई का सारा समाचार सुनाते हैं। तुम कैसे राजाई लेते हो और गंवाते हो। अलफ तो है ही सभी का बाप। वह तो हमको पढ़ाते

हैं। मूल बात रहती है विकर्म कैसे विनाश हो। इसलिए ही आत्मा बुलाती है शरीर द्वारा। मनुष्यों को तो कुछ भी समझ नहीं है।

तुम बच्चों को बुद्धि में यह रहता होगा, बाबा अभी मुरली चला रहे होंगे। मुरली आवेगी। यहां तो तुम बाप के सम्मुख हो। वहां तो भाई बैठते हैं। यह रथ भी जरूर याद आवेगा। इस रथ में बाबा है दो आत्माएं हैं। एक दादा की एक बाप की। कई नये मुंझते होंगे बाबा को कहां, कैसे याद करें। तुम बच्चे समझते हो। अगर तुमको मालूम हो बाबा मधुबन में नहीं हैं तो मिलने लिए कोई आवेंगे नहीं। सुनेंगे बाबा बम्बई में हैं, वहां तो इतने बच्चे आ न सके। यहां तो मधुबन है। सभी सेन्टर्स के वैराईटी आते हैं। वह भी सम्भाल के आते हैं। यहां तो है ही बच्चों के लिए निवास स्थान। हम जाते हैं शिवबाबा पास इस रथ द्वारा मिलने। पहले–2 तो अपन को आत्मा समझना है। हम परमपिता परमात्मा पास जाते हैं। वह तो ऊपर में रहते हैं। वहां आत्माएं जा सकती हैं। परमपिता परमात्मा भी रथ बिगर तो बात कर न सके। रथ में आकर ही समझाते हैं। इसलिए उनको नालेजफुल कहा जाता है। मनुष्य समझते हैं वही सभी कुछ देते हैं। किसको बच्चा होता है तो कहते हैं भगवान ने दिया। धन मिलेगा तो भी कहेंगे खुदा की कृपा है। तुम तो कहेंगे यह सब ड्रामा प्लैन अनुसार होता है। ड्रामा में नूँध है। स्वर्ग किसको कहा जाता है यह भी अभी पता पड़ा है। मनुष्य तो समझते हैं बहुत दुनियाएं हैं। कितने गपोड़े मारते रहते हैं। लाखों वर्ष की बात ही नहीं। बाप समझाते हैं जब कलियुग का अन्त सतयुग की आदि होती है तब मैं आता हूँ। बाप ही राईट बात बतलाते हैं। बाकी भक्ति मार्ग की बातें हैं सभी झूठी। मूल बात बाप फिर भी समझाते हैं मन्मनाभव। गीता में भी है मन्मनाभव। अर्थ कुछ भी समझते नहीं हैं। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। भगवान तो सभी बच्चों को कहेंगे ना। ढेर बच्चे हैं। यह है बेहद की पढ़ाई। बाप तो कुछ भी पुस्तक आद नहीं पढ़ते हैं। इसने सब पढ़ा है। बाप ने इसमें प्रवेश किया और गीता आद सभी फेंक दिया। गुरू गुसाई आद सभी एक ही धक्के से खत्म कर दिया। बाबा ने कहा यह सभी हैं भक्ति मार्ग के। आगे यह बातें नहीं समझाते थे। अभी कहते हैं। तुम कहेंगे पहले क्यों नहीं बताई। नहीं। यह सभी ड्रामा में नूँध है आगे चल और भी सुनाते जावेंगे। तुम प्रैक्टिकल में भी देखते रहेंगे। इन आंखों से तुम बच्चों को देखना है। विनाश पुरानी दुनिया का और स्थापना नई दुनिया की यह सभी तुम प्रैक्टिकल में देखेंगे। बाकी हनुमान, सूँढ़ वाला गणेश आद यह सभी हैं भक्तिमार्ग के। कितने ढेर चित्र बनाये हैं। बाप समझाते हैं नौधा भक्ति भी जो करते हैं तो उसकी वह मनोकामनाएं भी अल्पकाल के लिए सिद्ध कर देते हैं। वह भी ड्रामा में नूँध है। बाबा सा० कराते हैं। वह भी ड्रामा में नूंध है। बिगर नूंध सा० करा न सके। कब–2 बच्चे मुंझते हैं। कहते हैं यह भोग आद लगाना रांग है। बाप का परिचय पूरा न होने कारण संशय उठाते हैं। संशय बुद्धि विनश्यन्ति। फिर उनको वह ऊँच पद मिल न सके। नर से ना० बन न सके। विनश्यन्ति का अर्थ यह नहीं कि विनाश हो जावेंगे। नहीं। बाकी एम आब्जेक्ट का जो पद है वह मिल न सके। अनेक प्रकार के संशय आते हैं। अभी इसमें संशय लाने की तो दरकार ही नहीं। और कुछ भी नहीं समझते हो, बाप में तो संशय नहीं आना चाहिए। पूछते हैं यह बात कैसे हो सकती। अरे भगवानुवाच है ना। मधुबन में डायरैक्ट बाप के आगे, बाप के पास आये हो। उनके आगे भोग आद लगते हैं उसमें संशय की तो बात ही नहीं। बाबा ने समझाया है यह कोई ज्ञान–योग नहीं। इन बातों में संशय में मत जाओ। योग से ही विकर्म विनाश होंगे। भो(ग) आदि में यह कुछ नहीं। खुद भी समझते हैं फिर भी संशय उठाते हैं तो कहेंगे संशय बुद्धि विनश्यन्ति। स्वर्ग में भल आवेंगे परन्तु ऊँच पद नहीं पा सकेंगे। तुम तो हाथ उठाते हो बाबा हम नर से ना० बनेंगे। आगे कथा भी सत्य ना० की सुनते थे। वह था भक्ति–मार्ग। अभी तुम्हारा है ज्ञान मार्ग। कोई भी बात में संशय आता है तो पूछना चाहिए। बाप सभी कुछ समझाते रहते हैं। जो कुछ चलता है ड्रामा। तुम और किसको न देखो। सिर पर पापों का बहुत बोझा है। पहले तो वह खलास करो। बाप को याद करो तो पाप भस्म हो। बाकी

और बातों में संशय बुद्धि हो धक्का खाते रहेंगे। तो कुछ भी फायदा नहीं। फिर वह याद की यात्रा उड़ जाती। बाप को कायदे सिरे याद न करने से संशय बुद्धि भटकते रहेंगे। आज यहां एक बात करेंगे बाहर में फिर दूसरी बात जाकर करेंगे। डिस–सर्विस बहुत ही सत्यानाश कर देती है। अभी–2 निश्चय बुद्धि अभी–2 संशय में आ जाते हैं। भक्ति वाले मनुष्य बहुत फथकाते हैं। भगवान थोड़े ही आ सकता है। यह सभी गपोड़े हैं। थोड़ा भी संशय आया तो बाहर जाकर उल्टा बतावेंगे। सारी की हुई कमाई चट हो जाती है। क्योंकि उस तरफ़ है माया। तो माया डिस–सर्विस बहुत ही कराती है। एकदम थप्पर(ड़) लगा देती है जोर से। ऐसे बहुत आते हैं फिर जाकर(2) क्या–2 करते हैं। कोई तो अच्छी रीत समझते हैं बरोबर यह तो बाप पढ़ाते हैं। कोई का तो संशय ही टूट जाता। और ही सत्यानाश हो जाती है। दूसरों को का भी सत्यानाश तो अपनी भी सत्यानाश कर देते हैं। थोड़ ही बात में संशय हुआ तो एकदम माया के हाथ में आ जाते हैं। फिर माया भी अच्छी रीत बाप से बेमुख कर देती है। उनको फिर बाप याद आ न सके। मुर्दे के मुर्दे। पतित ही रहेंगे। ऐसे क्या पद पावेंगे। जाकर नौकर–चाकर बनेंगे जो ऐसे बेमुख होते हैं। भल ज्ञान सुना है, तो ज्ञान का विनाश नहीं होगा; परन्तु कोई संशय हुआ, डिससर्विस की तो क्या पद पावेंगे। वहां भी साहुकारों को दास–दासियां नौकर आद तो चाहिए ना। अनेक प्रकार के संशय आते हैं। तुमने यहां देखा भी बहुत अच्छा–2 कहता था, यह ज्ञान बहुत अच्छा है; ऐसा ज्ञान तो हमने कब न सुना। यहां से घर जाते ही कोई ने नाक से ऐसा पकड़ा जो और ही गालियां लिख भेजी। ऐसे भी होता है। ढेर के ढेर चिट्ठियां आती हैं। संशय बुद्धि हो जाते हैं। जिसको बाप समझता था। बाप समझ भाकी पहन कर गये, फिर ऐसी गाली बकते हैं। बाप कहते हैं दास–दासियां, नौकर–चाकर भी चाहिए ना। नहीं तो कहां से आवेंगे। इसलिए गायन है संशय बुद्धि विनश्यन्ति। सद्गुरु का निन्दक ठौर न पाये। ऊँच ते ऊँच ठौर न पावेंगे। जैसे कर्म करते हैं वैसा ही फल पाते हैं। कोई से(के) यहां गये अपने धंधे आद में सभी भूल जाते हैं। कोई डिससर्विस करते हैं निन्दा कराते हैं। उनके लिए बाप कहते हैं सद्गुरु के निन्दक ठौर न पाये। सद्गुरु के बच्चों को भी निन्दा न करनी चाहिए। निन्दा निन्दा कर माया के मित्र बन जाते हैं। बाप तो हरेक बात समझाते हैं याद भी कैसे करना चाहिए। ऐसे जो संशय बुद्धि हो डिससर्विस करते हैं उनको अगर आने न दो तो भी डिससर्विस करेंगे। दुश्मनी है ना। जितना बाप के मित्र हैं उतना ही फिर दुश्मन भी हैं। बाप के सभी मित्र बनते हैं। फिर सभी दुश्मन बनते हैं। जो गालियां देते हैं। ठिक्कर–भीतर(भित्तर) में कह देते। दुश्मन ठहरे ना। फिर बाप आकर उन्हों की सर्विस करते हैं। दूसरे तरफ़ फिर कहते हैं ठिक्कर–भित्तर, कुत्ते–बिल्ले में सभी में अल्ला है। एक तरफ़ अल्ला को याद भी करते हैं। कोई भी बात में नहीं ठहर सकते हो पागल बन जाते हैं। ऐसे बहुत हैं। बाबा को भाकी पहनकर फिर कहेंगे देखा भाकी पहनते हैं, यह करते हैं। अरे तुम क्या समझकर पहनी। वन्डरफुल समाचार आते हैं। माया कितनी दुस्तर है। बाप कहते हैं तुम बड़ी दुस्तर हो। मेरे बच्चों में ऐसी प्रवेश करती हो जैसे बैड सोल प्रवेश करती है। तुमको माया ने पापात्मा बनाया ना। एकदम सत्यानाश हो जाती है। तुमको वहां चण्डाल आद सभी चाहिए ना। तो ऐसे वह पद जाकर पाते हैं। बाप से या तो इतना ऊँच पद पाते हैं या एकदम नीच। सफाई आद करने वाले भी होंगे। राजाई में तो सभी चाहिए ना। भल बाप के बच्चे बनते हैं। साथ में रहते हैं तो क्या ऊँच पद पाते हैं क्या। साथ में रहने वाले दास–दासियां, सम्भालने वाले भी चाहिए ना। ज्ञान तो पूरा उठाते नहीं। अभी तुम सम्मुख सुन रहे हो। दूसरे भी फिर मुरली सुनेंगे। यहां भी आते हैं। अनेक प्रकार के बच्चे होते हैं ना। कोई तो असुर यहां अमृत पीकर फिर बाहर जाकर तंग करते हैं असुर बन जाते। ऐसे होता है। कोई तो छोड़ देते हैं। बस कोई निन्दा आद नहीं करते। भिन्न–2 होते हैं। स्वर्ग में तो सभी आवेंगे। सद्गुरु की वा उनके बच्चों की निन्दा कराने वाले ऊँच ठौर पा न सके। सुनते भी रहते हैं। बाहर में जाते हैं तो माया भी देखती है यह कच्चा है तो उल्टा काम करा देती है। बाहर गये और लगा माया का थप्पर(ड़)। दर–दर ग्लानी करने वाले भी स्वर्ग में आवेंगे। फिर पाई–पैसे का पद लेंगे। अच्छा मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।